International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 11-04-2024, Accepted: 04-05-2024, Published: 28-05-2024
Volume 10, Issue 2, 2024, Page No. 8-10

# राजस्थानी लोक साहित्य में अभिव्यक्त नारीः वीरांगनाओं के संदर्भ में

**रेशमा निलंगेकर[1], शशिकला राय[2]**
[1] हिंदी विभाग, सावित्रीबाई फुले, पुणे, विष्वविद्यालय पुणे, महाराष्ट्र, भारत
[2] प्रोफेसर, हिंदी विभाग, सावित्रीबाई फुले, पुणे, विष्वविद्यालय पुणे, महाराष्ट्र, भारत

**सारांश**
राजस्थानी लोक साहित्य में साधारण–सी दिखनेवाली, कोमल अंगोंवाली, वीरता और शौर्यता से अपने आप को देशप्रेम के लिए झोंकनेवाली इन वीरांगनाओं ने अपने जीवन को दूसरों के लिए न्यौछावर किया है। इसका बड़ा ही रोचक और ऊर्जावान वर्णन लोकगीतों, लोककथाओं और लोकगाथाओं में हुआ है।

**मूल शब्दः** वीरता, साहस, शौर्य, आदर्श नारी, पति को युद्ध भूमि पर भेजने के लिए तत्पर, जन्म से शिशुओं को संस्कार देती मां, पत्नी का सतीत्व आदि।

अपनी मातृभूमि की आन, बान और शान पर अपने प्राणों को न्यौछावर करनेवाली राजस्थानी नारियां कई वीरगाथाओं में अपना विशिष्ट स्थान रखती हैं। वीरों की यह भूमि युद्ध की क्रीड़ा स्थली रही है। यहां पुरुष ही नहीं स्त्रियों ने भी अपने सतीत्व और मातृभूमि की रक्षा के लिए अपने प्राणों को धधकती ज्वाला में हंसी–खुशी समर्पित किया है। लोक साहित्य में वीरों की शौर्य गाथाओं के साथ मातृभूमि की रक्षा करने की सीख माताओं द्वारा दी जाती है। पत्नियों ने धर्म की रक्षा के लिए अपने पतियों को युद्ध भूमि पर भेजा है। बहन, बेटियों ने शत्रुओं का सामना करने के लिए हाथों में तलवार उठाई है। इन वीरांगनाओं की शौर्यता और साहस का लोकगीतों, लोकगाथाओं, लोककथाओं आदि में अनुपम वर्णन मिलता है।

राजस्थान की भूमि वीरों की रणभूमि और वीरांगनाओं की जौहर भूमि रही है। राजस्थानी लोकगाथाओं और लोककथाओं में नारी का प्रेरणादायी शक्ति रूप में चित्रण हुआ है। एक स्त्री गर्भधारण से ही अपनी संतान को वीरता और शौर्यता की शिक्षा से संस्कारित करती है–

''इळा न देणी आप री रण खेता भिड जाय,
पूत सिखावै पालणै मरण–वडाई मायं।'' (1)

(अर्थात् झूले में पुत्र को झूलती मां उसे सीख देती है कि अपनी भूमि किसी को भी नहीं देनी है इसके लिए तुम्हें भले युद्ध ही क्यों न करना पड़े।)

माताएं अपने शिशुओं को झूला झूलते समय लोरी के रूप में 'जीवन जय' का संस्कार देती हुई कहती हैं–

''जतरी दाण थने मचका देऊ, वी मचका गणतो जाजे तू
वका पडो जद राज, धरम पे, जुद्ध भूमि में जाजे तू जतरी दाण.
खोल उघाडी छाती लड़जे, मोरां पे घाव मति खाजे तू जतरी दाण...
मर जाजे, कट जाजे रण में, चुड़ला को मान रखाजे तू जतरी दाण.....
जतरी दान थने मचका देऊं, शत्रु दाण धरा धुजाजे तू जतरी दाण.....'' (2)

(अर्थात् मां अपने पुत्र से कह रही है कि, 'मैं जितनी बार तुझे झूला दे रही हूं उसे गिनते जाना। समय आने पर राज धर्म के लिए तुझे युद्ध पर जाना है। सिना तानकर वारों को झेलना, कभी पीठ पर वार मत खाना। तू युद्ध भूमि पर मर जाना, कट जाना मेरे चुड़े की लाज रखना तू। जितने बार भी झूला दे रही हूं उतनी बार धरती को हिला देना तू। मेरे दूध और अपने वंश की लाज रखना।')

मां शिशुओं को लोरियों में धरती का कर्ज उतारने को कहती है–

''जण धरती पे जन्म लिखो वण रो करज चुकाजे तू।'' (3)

वीरता का वरण करनेवाली ये वीरांगनाएं दो बातें सहन नहीं कर सकती है – एक दूध को लज्जित करनेवाला पुत्र और दूसरी चुड़े को लज्जित करनेवाला पति। इसलिए वह कहती है–

''सहणी सबरी हूं सखी दो उर उलटी दाह,
दूध लजाणौ पूत तिम वलय लजाणौ नाह।'' (4)

इन वीरांगनाओं ने अपने पीहर तथा ससुराल दोनों पक्षों को अपनी वीरता और शौर्यता के आदर्शों से उज्जवल किया है। मां ने स्तन दिखाकर और पत्नी ने चूड़ी दिखाकर लाज बचाने की प्रेरणा दी है। यदि पुत्र दूध और पति चूड़ी की इज्जत बचा न पाएं तो ये अपने आपको बांझ और विधवा समझती हैं। पुत्र, पति, भाई को ये स्वयं आरती कर युद्ध के लिए विदा करते हैं। कामवासना में लिप्त अपने स्वामी को ये वीरांगनाएं युद्ध भूमि पर भेजने के लिए तत्पर रहती है। प्रेम पास के बंधनों से मुक्ति कराती हैं। इसका वर्णन 'वीर सतसई' में हुआ है–

''सूणतां हाको सहज ही कीधी जेज कदी न नींदाळू।
अब छोड़णा भिडाणा कुच पीन।'' (5)

चूड़ावत राजा की रानी 'हाडी रानी' में अपने पति (पत्नी प्रेम के कारण जो युद्ध भूमि पर नहीं जा रहा था) को मोह बंधन से मुक्त करने के लिए अपना सिर काटकर निशानी के तौर पर भेजती है और राजा होश में आकर रानी का विचार त्याग युद्ध करने के लिए चला जाता है। लोकगीत में 'हाड़ी रानी' की वीरता का गुणगान हुआ है–

''चूंडावत मांगी सेनाणी, सिर काट दे दियो छत्राणी।''

(अर्थात् चूंडावत राजा ने पत्नी की चाह की और उस वीरांगना ने अपना सिर काटकर भेंट में भेज दिया।)
नारंग दे अपने शिशु को अपने दूध की आदत नहीं डालती है क्योंकि उसका पति एक वीर योद्धा है। वह सती होने के लिए हमेशा तैयार रहना चाहती है और इसलिए वह अपने बच्चे को अपना दूध न पिलाकर बकरी के दूध की आदत डालती है ताकि बच्चे को मां के दूध की आदत न लगे। लोकगीत में इसका वर्णन हुआ है –

''सखी नह रण बांकडौ पिसण दळ सांकडौ जाणं गुणनार पिय संग जावै। कुळ वधू मंडलक तणी तिण कारणै पूत छाळी तणा दूध पावै।'' (6)

(अर्थात् हे सखी! मेरा पति रण बांकुरा है। हमेशा युद्ध भूमि पर ही रहता है। मैं उनके गुणों को जानती हूं। वह मुझे कभी–भी सती होने का अवसर दे सकता है। इसलिए मैं अपने शिशु को मेरे दूध की नहीं बकरी के दूध की आदत डाल रही हूं।)
राजस्थान की वीरांगनाएं कायर पुरुष का पड़ोस भी पसंद नहीं करती हैं। जहां वीर पुरुष होते हैं वहां वे बलिहारी जाती है। फिर ऐसी स्त्री अपने पति की कायरता को कैसे सहन कर सकती है? वह कहती है कि –

''विण मरिया विण जीतियां जे धव आवै धाम,
पग–पग चूड़ी पाछटूं तो रावत–री जाम।'' (7)

(अर्थात् बिना मारे या बिना जीते भाग कर पति अगर घर आए तो मैं अपनी चूड़ियों को उसके पैरों तले तोड़ न दूं तो मैं रावत की बेटी नहीं)
रणभूमि से भागकर आए पति की व्यंग्य वाक्यों द्वारा आलोचना करती हुई ये वीरांगनाएं अपने पतियों में वीरता का संचार करती थी। जसवंत दे, हाडी और विधुलत्ता ऐसी ही वीरांगनाएं थी। व्यंग्य से शराब में डूबे अपने पति जोरावर सिंह को फटकार लगाती है–

''क्यांने बांधौ सीस पाघड़ी क्यांने बांधौ सूत?
हाथां रा हथियार सूंप दो, चूड़ी पैरों लाख री।'' (8)

(अर्थात् आपने सर पर पगड़ी क्यों बंद रखी है? हाथ से हथियार रख दो और लाख की चूड़ियां पहन लो।)
इस प्रदेश की वीरांगनाएं समय आने पर रणचंडिका का रूप भी धारण कर लेती थीं। घर में पुरुष न हो तो शत्रुओं से मुकाबला करना भी वे जानती थीं। वह कहती हैं कि, 'घोड़ा चढ़ना, तलवार चलाना हमने क्यों सीखा था? शत्रु आने पर उसका प्रयोग कर सके इसीलिए न।' जवाहर बाई ने जौहर करने से उचित समझा कि वह शत्रु से युद्ध करें क्योंकि वह उसके देश के हित में था। वह कहती हैं –

''वीर छत्रराणियां जौहर करके हम केवल अपने सतीत्व की रक्षा कर सकेंगे। इससे देश की रक्षा नहीं हो सकेगी। हमें मरना तो है ही इसलिए चुपचाप असहाय की भांति क्यों मरें? हम शत्रुओं को मार कर मरें। बैरियों का खून बहाकर रणगंगा में अवगहन करें और जीवन को ही नहीं मृत्यु को भी सार्थक बनाएं।'' (9)

पिता की आज्ञा को सर्वोपरि मानकर 12 वर्षों तक राजा जैमाल के यहां पुरुष वेश में रहकर 'सजना' आत्मबल और साहस से सुरक्षित लौट आती है। 'सजना' लोकगीत में उसके साहस का बहुत बढ़िया वर्णन किया गया है। कुछ पंक्तियां –

''करिया सजना मरदाना भेस करला ललकारया,
ऐ बाई सजना ढळती रातरा होगी सजना घुडले असवार।'' (10)

(अर्थात् सजना ने पुरुष का वेश धारण किया और आधी रात में घोड़े पर सवार होकर सामने आनेवाली चुनौतियों को ललकारते हुए चली गई।)
सवाई भोज की पुत्री ने भी बहादुरी से रण के राव की फौज से युद्ध किया था। इसके लिए लोकोक्ति प्रसिद्ध हो गई कि,

''और जगां लड़े लोग रायळा में लड़े लुगाई।'' (11)

ये देश प्रेम और कुलधर्म की रक्षा करनेवाली वीरांगनाएं है। लोक साहित्य में पुरुषों के वीरता की तुलना में स्त्री की वीरता तिगुनी बताई गई है–

''समर चढ़ै कांठा चढ़ै तेज न पिव रौ साथ,
हेक–गुणां नर सूरमा, तिगुण तिया जात'' (12)

(अर्थात् नारी पति के साथ युद्ध भूमि में जाती है, युद्ध में जूझती है और पति के साथ सती हो जाती है इसलिए वह अपने पति से तीन गुना ज्यादा शक्तिशाली है।)

## निष्कर्ष

कहीं वीर मां, कहीं वीर बहन,कहीं वीर पत्नी,कहीं वीर पुत्री, कहीं वीर ननंद, कहीं वीर भाभी के रूप में इन वीरांगनाओं ने अपनी वीरता, साहस और शौर्यता का अनूठा परिचय दिया है। लोकगीतों, लोककथाओं, लोकगाथाओं आदि में इनकी वीरता की कहानियां, गीत और गाथाएं मिलती हैं। राजस्थानी लोक साहित्य में साधारण–सी देखने वाली, कोमल, सुंदर नारियां समय आने पर रणचंडिका का रूप धारणकर वीरता और साहस के साथ देशप्रेम पर अपने आप को न्यौछावर करती दिखाई देती हैं। इन वीरांगनाओं की वीरता और साहस आज जन साधारण के आदर्श बने हैं। जिनकी वीरता के गीत लोकगीत, लोकगाथा और लोककथाओं को सुनकर और पढ़कर एक आत्मबल और नई ऊर्जा का संचार होता है और होता रहेगा।

## संदर्भ सूची

1. वीर सतसई (सूर्यमल्ल मीसन कृत) सं. नरोत्तमदास स्वामी, राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर, संस्करण 1998, पृष्ठ संख्या – 33
2. मालवी की रसवंती लोरियां – डॉ. पुरन सहगल (डॉ. जयपालसिंह राठौड़, जोधपुर द्वारा लूर के लोरी अंक में प्रकाशित है –अंक 5–6 जनवरी दिसंबर 2005)
3. मालवी की रसवंती लोरियां – डॉ. पुरन सहगल (डॉ. जयपालसिंह राठौड़, जोधपुर द्वारा लूर के लोरी अंक में प्रकाशित है –अंक 5–6 जनवरी दिसंबर 2005)
4. वीर सतसई (सूर्यमल्ल मीसन कृत) सं. नरोत्तमदास स्वामी, राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर, संस्करण 1998, पृ.सं. – 29

5. वीर सतसई (सूर्यमल्ल मीसन कृत) सं. नरोत्तमदास स्वामी, राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर, संस्करण 1998, पृ.सं. – 68
6. राजपूत नारियां – विक्रम सिंह राठौड़ (चौथा संस्करण–2016), पृ.सं.162–163
7. वीर सतसई (सूर्यमल्ल मीसन कृत) सं. नरोत्तमदास स्वामी, राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर, संस्करण 1998, पृ.सं. – 41
8. राजस्थानी लोक साहित्य का सैद्धांतिक विवेचन – डॉ. सोहनदान चारण (दूसरा संस्करण 2016) पृ.सं. – 231
9. राजपूत नारियां – विक्रम सिंह राठौड़ (चौथा संस्करण–2016), पृ.सं.–94
10. राजस्थान के लोकगीत –सं. रामसिंह, सूर्यकरण पारिक, पृ. सं. – 556
11. राजस्थानी लोक साहित्य का सैद्धांतिक विवेचन – डॉ. सोहनदान चारण (दूसरा संस्करण 2016) पृष्ठ संख्या – 232
12. नाथूसिंह महियारिया।